

प्रभात खबर के वरषिष्ठ पत्रकार राजीव पांडेय को मिला 'लाडली मीडिया अवॉर्ड'

चर्चा में क्यों?

हाल ही में लैंगिक समानता के क्षेत्र में काम करने वाली प्रतिष्ठिति संस्था 'पॉपुलेशन फरसूट' द्वारा प्रभात खबर के रांची यूनिट के वरषिष्ठ पत्रकार राजीव पांडेय को 'लाडली मीडिया अवॉर्ड्स 2023' से सम्मानित किया गया है।

प्रमुख बिंदु

- वर्षाविति हो कि 'पॉपुलेशन फरसूट' संस्था की ओर से लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिये लाडली मीडिया अवॉर्ड दिया जाता है। संस्था द्वारा लाडली मीडिया अवॉर्ड की घोषणा इस साल 21 अक्टूबर को की गई थी।
- इस अवॉर्ड के लिये देश भर से 13 भाषाओं के करीब 850 से ज्यादा पत्रकारों ने प्रवर्षितियां भेजी थी, जनिमें जूरी मेंबरस ने 87 का चयन किया और उन्हें सम्मानित किया। इनके अलावा 31 पत्रकारों को जूरी प्रशंसा पत्र दिया गया।
- पॉपुलेशन फरसूट संस्था की ओर से आयोजित 13वें लाडली मीडिया एंड एडवरटाइजिंग अवॉर्ड फॉर जेंडर सेंसिटिविटी (रीजनल) 2023 में प्रभात खबर को अवार्ड मिला है। पछिले वर्ष भी प्रभात खबर के एक अन्य पत्रकार गुरुस्वरूप मशिरा को भी इस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था।
- प्रभात खबर रांची यूनिट के मुख्य संवाददाता राजीव पांडेय द्वारा प्रकाशित घरेलू कामगारों पर एक स्टोरी 'घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहताना' के लिये उन्हें अवॉर्ड मिला।
- जयपुर के राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में बाबा आमटे दवियांग वशिवदियालय, जयपुर के कुलपति प्रो. डॉ. देव स्वरूप, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के पॉलिसी व साझेदारी प्रमुख जयदीप बसिवास, यूएनएफपीए की प्रोग्राम मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट अनुजा गुलाटी और लोक संवाद संस्थान के सचिव कल्याण सहि कोठारी ने राजीव पांडेय को सम्मानित किया।
- गौरतलब है कि राजीव पांडेय को इससे पहले भी चेन्नई की संस्थान रीच द्वारा तीन फेलोशिप अवॉर्ड दिया गया है। वर्ष 2014 में टीबी की बीमारी में झारखंड की स्थिति पर, वर्ष 2019 में नॉन कमयुनिकेबल डजीज और वर्ष 2023 में डायबिटीज पर फेलोशिप प्राप्त हुआ है।

रांची। पटना। जमशेदपुर। धनबाद। देवघर। कोलकाता। मुजफ्फरपुर। भागलपुर से प्रकाशित



घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहताना

राजीव पांडेय रांची

झारखंड में घरेलू कामगारों में 70% को माहौल में मात्र 3,000 रुपये और 10% को अधिकतम 4,000 रुपये का वेतनमान मिलता है, बाकी 20% कामगार 2000 रुपये में भी काम करने को विवश है, घरेलू कामगारों में 40.9% शिक्षित हैं, यह आंकड़ा झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क रांची द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करनेवालों की स्थिति' पर किए गये सर्वे में मिला है।

68.8% को माह में कर तीन को मिलती है छुट्टी। रिपोर्ट में बताया गया है कि 40.9% में 13.1 को तिखन और पढ़ना आता है, जबकि 22.6% ने पांचवें तक, 3.6% ने मैट्रिक और 1.5% ने इंटरमीडिएट को पढ़ा पूरी को है, कम वेतन और शिक्षित होने के

बाद भी 68.6% को माहौल में मात्र चार दिन की छुट्टी मिलती है, अन्य सामाजिक अवकाश और एग्रीमेंट के अनुसार छुट्टी लेते हैं, 50% से अधिक घरेलू कामगार दोपहर का भोजन (उनके द्वारा ले जाकर) अपने निवेश के घरों में खाते हैं, लेकिन वहाँ के किचन में खाने का उपयोग नहीं करते हैं, घरों पर बैठकर उनके खाना भी खाना पड़ता है, वहाँ कुछ तो अपार्टमेंट को सांठियों के नीचे खा लेते हैं, अगर इनके आर्थिक पालू को बात को जाये, तो लगभग 85% घरों में काम करनेवालों का कच्चा घर है और अलग किचन नहीं है, इसके अलावा उनको पैसे के लिए कुर्प के पाने पर आश्रित रहना पड़ता है, उनके कार्य करने के समय का भी आकलन किया गया है, जिसमें 47.6% आगम नहीं कर पाते हैं,

झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क की सर्वे रिपोर्ट



40.9%
घरेलू कामगार शिक्षित

59.1%
घरेलू कामगार अशिक्षित पाये गये

67% के पास साइकिल और 10 % के पास टेलीविजन

रिपोर्ट की मने तो घरेलू कामगारों की स्थिति भी खरोबदार नहीं है, 67 फीसदी के पास साइकिल, 8 फीसदी के पास प्रसार कुकर, 34 फीसदी के पास रेडियो, 10 फीसदी के पास टेलीविजन और लगभग 6 फीसदी के पास बिजली के पंखे हैं, इनकी सामाजिक स्थिति भी बेहतर नहीं है, ईमन, विजली और शौचालय की सुविधा भी टीक से नहीं मिलती है, इनकी आय 81.8 फीसदी श्रम करने और 10.2 फीसदी कृषि से होती है, वहीं 1.5 फीसदी के पास व्यवसाय और 6.6 फीसदी के पास आय के अन्य स्रोत हैं,

झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति पर हुई सर्वा

झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क रांची द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति' पर सर्वे की गयी, कांदाटोती स्थित होटल कोरल ग्रीड में आयोजित इस कार्यक्रम में समाजिक कार्यकर्ता तरमणि खट्ट ने कहा कि अनुसूचित जातिये व जनजातिये के ऊखन के शिर सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को मिलकर काम करना होगा, औरसहोम इंडिया की सहभा सुरेन ने कहा कि डोमरेटिक वर्कर्स जब अपनी समस्याएं लेकर पुलिस अथवा सरकारी संस्थानों के पास जाते हैं तो उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है कई बार उनके ही करेन पर स्वात उठाया जाता है, वरिष्ठ पत्रकार माधुकर ने कहा कि इन्हे मदद की जरूरत है,



PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/prabhat-khabar-s-senio-journalis-rajee-pandey-received-laadl-media-award>

